हिंदी एवं नेपाली कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन

(2001–2020 तक के चयनित कहानियों में संवेदना के संदर्भ में)

शोध सार :

आज पाश्चात्य सभ्यता, बाजारवाद, स्वार्थपरता एवं भोगवादिता की प्रवृत्ति भारत में प्रबल होती जा रही हैं। जिससे व्यक्तिवाद बढ़ा, संयुक्त परिवार टूटे, आदर भाव कम हुआ । मानव मूल्य, नैतिक मूल्य एवं जीवन मूल्य पर्याप्त गति से संक्रमित तथा परिवर्तित हुए हैं। तुलनात्मक अध्ययन द्वारा अनेक समानतापरख तथ्यों एवं सत्यों की स्थापना करके भारतीय संस्कृति की मूलभूत एकता की भावना को फिर चरितार्थ किया जा सकता है। स्पष्ट है कि विभिन्न प्रांतों एवं देशों के साहित्य में विविध रूपों में व्यक्त मानव– चेतना की अखंडता, विराटता एवं जिजीविषा को तुलनात्मक अध्ययन द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है। तुलनात्मक साहित्य मात्र साम्य–वैषम्य प्रकट करने वाली तुलना भर नहीं है ।यह तो साहित्य– विशेष को पृष्ठभूमि प्रदान करने वाली, सामूहिक प्रवृत्तियों के संधान द्वारा मानवीय कार्यकलाप के अन्य क्षेत्रों के पारस्परिक संबंध से अवगत भी कराती है। वस्तुतः सर्वोत्कृष्ट साहित्य अर्थात गौरव ग्रंथों में देशकाल से परे तुलनात्मक अध्ययन द्वारा कुछ ऐसी विशेषताएं व संबंध– सूत्र प्रकट होते हैं जिस पर हमारा ध्यान ही नहीं जाता । इस गौरव – ग्रंथों पर पड़ने वाले देशज प्रभाव, उपलब्धियों का पाठालोचन, उस कृति का उत्स, प्रभाव–प्रक्रिया, व्यक्तिगत दृष्टिकोण आदि का अध्ययन वैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा किया जाता है ।

साहित्य का समय अनुशीलन में तुलनात्मक दृष्टि महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। भूमंडलीकरण के युग में तुलनात्मक अध्ययन का महत्व मानवतावाद एवं विश्व मानवतावाद की बंधुत्व भावना के साथ और भी बढ़ गया है। विश्व साहित्य की एकता का निरूपण और उसके द्वारा विश्व मानव की एकता का उद्घाटन करने के लिए तुलनात्मक अध्ययन महत्वपूर्ण है।

तुलनात्मक अध्ययन मानव के सीमित ज्ञान क्षेत्र का विस्तार करता है और उसके ज्ञान अर्जन में भाषा, साहित्य एवं देश आदि को बाधा नहीं डालने देता । तुलनात्मक अध्ययन उच्चतर ज्ञान वृद्धि में सहायक होता है। समूचे विश्व में जाति, वर्ण, धर्म आदि वैषम्य होते हुए भी मनुष्य– मनुष्य में प्रायः समानता पाई जाती हैं । वातावरण, रीति– रिवाज संस्कृति एवं सभ्यता आदि विषयों में भिन्नता होते हुए भी मानव मन एक ही सांचे में ढला है। तुलनात्मक अध्ययन से मनुष्य संकुचित मनोवृत्ति से मुक्त होकर व्यापक दृष्टिकोण अपनाते हैं वह औरों का महत्व स्वीकार कर उनसे रागात्मक संबंध स्थापित करता है। सांस्कृतिक आदान–प्रदान भी तुलनात्मक अध्ययन से संभव है। विश्व के अनेक राष्ट्रों के बीच सांस्कृतिक संबंध इसी आधार पर स्थापित हो रहे हैं। विश्व संस्कृति को एक मंच पर लाना तुलनात्मक अध्ययन द्वारा ही संभव है। आज बाजारवाद एवं अंधी आधुनिकता में सबसे अधिक किसी मूल्य का पतन हुआ है तो वह मानवीय संवेदना है। इस शोध आलेख का एक उदेश्य आज के संदर्भ में दो भाषाओं के बीच इस मानवीय संवेदना की तलाश है।

बीज शब्द : बाजारवाद, स्वार्थपरता, भोगवादिता, संकुचित मनोवृत्ति, सर्वोत्कृष्ट, साम्य–वैषम्य, रागात्मक संबंध, भंगिमा, प्रस्फुटित, व्युत्पत्तिपरक, भावानुभव, सहानुभूति, अनुभवजन्य ज्ञान, मनोवृतियां, बुद्धिवाद, बहुचर्चित, वैशिष्ट्य, सहभागिता इत्यादि ।

मूल आलेख:

साहित्य का संबंध मूलतः मानव एवं मानव हृदय से हैं। वह रचनाकार के हृदय से निकलकर आस्वादक के हृदय तक पहुंचता है। हृदय से हृदय तक की इस यात्रा में मुख्य भूमिका संवेदना की होती हैं। प्रारंभ से आज तक यह संपूर्ण समाज जिस आधार पर टिका हुआ है, वह संवेदना ही है। संवेदना–हीन साहित्य का कोई मूल्य नहीं चाहे उसमें बुद्धिवाद का कितना ही ऊहापोह क्यों न हो, दर्शन की नई–नई भंगिमा क्यों न हो, बुद्धि, दर्शन, चिंतन, ज्ञान, विज्ञान सबको पहले जीवन में आत्मसात होना पड़ता है। अपने साथ होकर मानव संवेदन का अंग बनना पड़ता है। तभी साहित्य में सत्यम शिवम् और सुन्दरम् की भावना प्रस्फुटित हो सकती हैं।

संवेदना संस्कृत का शब्द है। जिसका अर्थ है सुख – दुख का अनुभव या ज्ञान की प्रतीति । 'संवेदन' शब्द पुलिंग है। इसमें 'आ' प्रत्यय लगने से उसका स्त्रीलिंग रूप 'संवेदना' बना है। विभिन्न विद्वानों ने संवेदना का अर्थ स्पष्ट करने की कोशिश की है।

अज्ञेय की दृष्टि में–"संवेदना वह यंत्र है जिसके सहारे जीव दृष्टि अपने से इधर सब कुछ के साथ संबंध जोड़ती है वह संबंध एक साथ ही एकता का भी हैं और भिन्नता का भी क्योंकि उसके सहारे जहां जो दृष्टि अपने से इतर जगत को पहचानती है, वहां उस से अपने को अलग भी करती है।"(1)

रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार –"आचार्य शुक्ल ने अपने इतिहास के आमुख में 'जनता की चित्तवृत्ति' के परिवर्तन की बात कही थी। आज की भाषा में चित्तवृत्तियों के संश्लेषण को संवेदना कहा जाएगा।"(2)

डॉ सुरेश सिन्हा के शब्दों में –"साहित्य में संवेदना से अभिप्राय वह अनुभूति प्रवणता है जो नई अर्थवत्ता प्रदान करते हैं।"(3)

अतः मोटे तौर पर किसी भी वस्तु भाव या स्थिति का हृदय पर जो प्रभाव पड़ता है और उसकी जो प्रतिक्रिया होती है उसे ही संवेदना कहते हैं । इसे उदाहरण के तौर पर भी समझा जा सकता है यह दुनिया कितनी बड़ी है और कितनी भरी–पूरी है। इसके इतने सारे रंग और रूप है। इतने सारे पदार्थ हैं, इतनी वस्तुएं हैं। प्रत्येक वस्तु प्रत्येक घटना हम पर किसी– न– किसी रूप में असर डालती है, जैसे पानी में कंकर फेंकने से तरंग उठती है वैसे ही हम जब कुछ देखते सुनते हैं या जब हमें कुछ होता है तो हम भी प्रतिक्रिया करते हैं। हमारा हृदय प्रभावित होता है और तब उस प्रकार के अनुरूप भाव उत्पन्न होता है। वस्तुओं का हृदय पर पड़ने वाला यही प्रभाव और उससे उत्पन्न प्रक्रिया ही संवेदना कहलाती है।

सामाजिक संवेदना–

मनुष्य का समाज से बहुत गहरा संबंध है। मनुष्य का हर एक क्रियाकलाप समाज सापेक्ष होता है। समाज के बिना मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं और यही नहीं समाज के बगैर सामाजिक संवेदना का भी कोई अर्थ नहीं। दोनों एक दूसरे कि पूरक हैं। दोनों का संबंध बहुत अटूट है। साहित्य का सृजन करने वाला साहित्यकार भी मनुष्य ही होता है और मनुष्यता कि कारण उसका सामाजिक संवेदना के साथ बहुत गहरा नाता होता है। वह अपनी इन्हीं सामाजिक संवेदना को अपने साहित्य में चित्रित करता है। संवेदना और साहित्य एक सिक्के के दो पहलू के समान

है। मनुष्य की इसी बहुआयामी भूमिका को स्पष्ट करते हुए डॉ रामविलास शर्मा ने लिखा है कि –"मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास उसके सामाजिक जीवन से संभव हुआ है। इसलिए व्यक्ति और समाज की स्वाधीनता परस्पर विरोधी न होकर एक दूसरे पर आश्रित है।"(4)

सामाजिक सहभागिता के द्वारा ही वह समाज का एक विशिष्ट व्यक्ति बन जाता है। समाज मानव के विकास की धुरी है। समाज की हर एक संवेदना को रचनाकार यथार्थ के स्तर पर व्यक्त करता है। प्रेमलता दुआ के शब्दों में," रचनाकार सामाजिक यथार्थ को संवेदना, भावना और मूल्यों के स्तर पर व्यक्त करता है। साहित्य एक सामाजिक कर्म है। जिसकी सारी प्रक्रिया सामाजिक इतिहास के भीतर घटित होती हैं। साहित्य में समाज गहरे में बैठा रहता है।"(5) साहित्यकार के साहित्यकारों के मूल में उसके सामाजिक संवेदना का मुखरित रूप निहित रहता है।

राजनैतिक संवेदना –

राजनैतिक संवेदना का मूल भाव राजनीतिक चेतना से हैं यह चेतना साहित्य में व्यापक स्तर पर मुखरित हुई है। विभिन्न साहित्यकारों ने अपने– अपने साहित्य के माध्यम से राजनैतिक संवेदना को चित्रित करने का प्रयास किया है। साहित्य में राजनीति पर बहुत कुछ लिखा गया है और बहुत कुछ लिखना शेष भी हैं। क्योंकि समय के साथ बदलते परिवेश में राजनीतिक विसंगतियों का चित्रण करना साहित्यकार का धर्म भी है और कर्म भी। समाज में जिस प्रकार से राजनीति अपनी जड़े जमा रहा है उसे देखकर राजनैतिक संवेदना के स्तर को समझा जा सकता है। आज समाज का हर एक वर्ग राजनैतिक चेतना से युक्त है वह अपने अधिकारों के प्रति सजग है, उसे अपने कर्तव्यों का भली–भांति बोध है। आज का वर्तमान राजनीतिक समाज गुलामी वाले राजनीतिक समाज से पूर्णत: अलग है।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक संवेदना :

साहित्यकार जब भी किसी साहित्य की रचना करता है उसमें वह तत्कालीन धार्मिक व सांस्कृतिक चेतना का वर्णन अवश्य करता है। धर्म का सीधा मतलब होता है व्यक्ति को जीवन जीने की शैली, किंतु कुछ धार्मिक उन्माद फैलाने वालों ने इसे मंदिर मस्जिद एवं चर्च तथा गुरुद्वारा तक सीमित कर दिया है। किसी भी प्रकार की धार्मिक कट्टरता का बढ़ावा मानव समाज के लिए सबसे बड़ा खतरा है। धार्मिक कट्टरता के कारण ही धर्म के नाम पर लोगों को गुमराह किया जाता है। इसके अलावा विश्व के कई देशों में धर्म के नाम पर लोगों का शोषण आज भी जारी है। आतंकवाद इसी धार्मिक उन्माद की देन है। धर्म के प्रति निष्ठा व्यक्ति को अंधा बना देती हैं। धर्म के प्रति जब जब इस प्रकार का अतिशय प्रेम उमड़ता है तो वह आने वाले समय के लिए समस्या का केंद्र बिंदु बन जाता है। धार्मिक संवेदना का वर्णन साहित्यकार यथासंभव अपने कृति में करता हुआ चलता है।

किसी भी समाज में रहने वाले व्यक्तियों की संस्कृति उसकी पहचान होती है। किसी भी समाज की आत्म प्रेरणा उसकी संस्कृति में निहित होती है। साहित्य और संस्कृति का चेतना का अंतर संबंध बहुत ही पुराना है। साहित्य की एक बहुत ही महत्वपूर्ण कड़ी संस्कृति के रूप में विद्यमान है। कोई भी समाज संस्कृति के अभाव में अपने आत्म का विकास नहीं कर सकता। संस्कृति मानव के आंतरिक सौंदर्य का केंद्र होता है। वह इसी सौंदर्य से अभिभूत होकर सांस्कृतिक संवेदना का संरक्षण करता है। संस्कृति और धर्म को अलग–अलग करके नहीं देखा जा सकता क्योंकि धर्म भी

संस्कृति का ही एक अंग है। धर्म के कारण ही संस्कृति को बल मिलता है। पूनम मदान के शब्दों में ," संस्कृति मानव द्वारा प्राप्त सबसे महान अवधारणा की संकल्पना है।"(6) संस्कृति किसी भी मनुष्य कि जन्मजात संपत्ति नहीं होती बल्कि वह उसका अर्जन करता है यह अर्जन वह समाज में रहकर करता है।

अखिलेश एवं असीत राई

अखिलेश अपने समय के ऐसे रचनाकार हैं, जो विभिन्न संभावनाओं के साथ आगे बढ़ते हैं। वह संभावनाओं से नाता नहीं तोड़ते और इसी के साथ भविष्य की चिंता करते हैं। अखिलेश की कहानियों में विविधता देखने को मिलती है । मानव जीवन, बाल मनोविज्ञान, समाज के सूक्ष्म चित्रण, राजनीति की गहरी पहुंच के साथ- साथ जीवन के कई अहम बिंदुओं को उन्होंने अपने कहानियों का विषय बनाया है। अखिलेश की कहानियों में संवेदनाएं पात्रों, विषयों एवं भावों के साथ मिलकर एकाकार हो गई है। उनके कहानियों में समाज के विभिन्न यथार्थ का नग्न चित्रण निसंकोच एवं सहजता के भाव के साथ दिखाई देते हैं जो स्वीकृत है। वह अपने कहानियों के माध्यम से समाज की विभिन्न समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते दिखाई देते हैं। अखिलेश की कहानियों पर विचार करते हुए यह बात साफ होती है इस दौर के कहानीकारों ने समकालीन समय, समाज परिवर्तन एवं विकास की प्रक्रियाओं को ध्यान में रखते हुए कहानी की दुनिया रखी है। इन्होंने मध्यवर्गीय जिंदगी और उसके सामानांतर जीवन की समस्याओं से जूझ रहे आम आदमी को मजबूत इरादों के साथ कहानियों में चित्रित किया। अखिलेश की 'बायोडाटा' इसी प्रकार की कहानी है। बायोडाटा कहानी का नायक रामदेव अपनी पत्नी के प्रति जो व्यवहार दिखाता है वह सचमुच अमानवीयता की चरम चरम स्थिति हैं। ऐसा लगता है पद,प्रतिष्ठा और पैसा के चक्कर में राजदेव के अंदर मानवीय संवेदना मानो खत्म हो चुकी है । राजदेव अभाव के साथ लालच में जी रहा है अपने इच्छाओं की पूर्ति के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपनाता है, क्योंकि वह हथकंडे मान्यता का गला घोट कर किया जाता है इसलिए सफल भी नहीं हो पाता और रामदेव जैसे पात्र अधिक अमानवीय हो जाते हैं। अब सवाल यह खड़ा होता है कि 'बायोडाटा' के रामदेव जैसे पात्र और अधिक अमानवीय होने पर मजबूर हैं अथवा मजबूर किए जा रहे हैं । क्या यह समकालीन समय का दबाव है अथवा उत्तर आधुनिक समाज का यथार्थ जहां और मानवीय होना मनुष्य की नियति बनती जा रही है? क्या स्थिति इतनी भयावह है कि समकालीन समय में मनुष्य और मानवीय होने के लिए विवश है? सत्ता की भूख को राजदेव किसी भी हालत में पूरा करना चाहता है। उसने अपने को धिक्कार और राजनीतिक चर्या को समर्पित हो गया । पार्टी ऑफिस पहुंचकर बोला अब तक मैं भ्रमित था अब मैं फिर से अपने घर वापस आ गया हूं । इस कहानी में अखिलेश जी ने सत्ता में संवेदना के खत्म होने की विकट स्थिति को भी दर्शाया है। पहली बार जब पिता बनने का संदेश उसे मिलता है तो वह उससे खुश नहीं होता अपितु गुस्से में बरसने लगता है और कहता है "आखिर इतनी जल्दी प्रेग्नेंट होने की क्या जरूरत थी और अगर भूल से चूक हो गई तो बीमार होने की क्या जरूरत लेकिन यहां मम्मी बनने का शौक चल रहा है आप थाना कुछ नहीं बस मेरे किस्मत के रास्ते में रोड़ा खड़ा करना था बड़ी चली आई 'कम सुन' वाली.....।"(7) स्पष्ट है रामदेव का इस प्रकार संवेदना शून्य होने के पीछे कई कारण है जिसमें पूंजीवाद, उत्तर आधुनिकतावाद, सत्ता स्वार्थएवं ओढ़ी हुई नैतिकता भी हैं। यही कारण है कि अपने पत्नी और बच्चे को वह अपनी सफलता का हथियार बनाता है ।

एक ओर अखिलेश की कहानियां जहां निर्मता के साथ बदलते समय के घात–प्रतिघात, युवाओं की हताशा एवं मनुष्यता की दुर्दशा के चित्र है तो वहीं वे उम्मीद का दामन भी नहीं छोरते उम्मीद का एक सोता उसकी रचना प्रक्रिया में सदा के लिए प्रवाहित होती रहती है।

इसी प्रकार अनेक विषयों का विकास हम उनके कहानी संग्रह 'अंधेरा' में देख सकते हैं। वास्तव में शापग्रस्त कहानी संग्रह एक ऐसी पृष्ठभूमि है जिस पर आगे की कहानियां अपना विस्तार पाती हैं ।अखिलेश की 'यक्षगान' एक ऐसी कहानी है जिसमें राजनीति के साथ–साथ मानवीय संवेदना के सिकुड़न की गाथा है। जिसमें दोहरे व्यक्तित्व के द्वारा मानवीय संवेदना को तार–तार कर दिया जाता है । कहानी में एक ग्रामीण लड़की सरोज पांडे की दर्द में स्थिति का चित्रण है जो नाकारा एवं लुच्चे इंसान के प्रेम के छल में फंस जाती है, उसका विवाह से पहले ही सौदा कर देने वाला धोखेबाज पति छैल बिहारी है तथा लड़की को खरीदने वाले काम लोलुप गांव की पार्टी कार्यकर्ता भोला है जो सत्ताधारी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष गोरखनाथ एवं उनको संरक्षण देने वाले ताकतवर महंत के काफी करीबी हैं। यह बचपन से लड़की की आसक्ति में डूबा जुझारू एवं फक्कड़ युवा नेता श्याम नारायण है जिसका पार्टी सचिव इस बात से बिल्कुल बेखबर है कि किसी मासूम लड़की के साथ हुई बलात्कार की किसी सुनियोजित घटना के मुद्दे पर पार्टी को आगे आना चाहिए। यहां मौके का फायदा उठाने की तलाश में गिरगिट की तरह रंग बदलने वाली महिला नेता मीरा यादव भी है,जिनकी पार्टी के मुखिया के लिए प्रतिपक्ष के ऊपर आक्रमण करने का अवसर मिलने की अपेक्षा अपनी पार्टी का जातिगत समीकरण बनाए रखना ज्यादा महत्वपूर्ण है। यहां सत्ता में विराजमान एक ऐसा मुख्यमंत्री है जो अपनी पार्टी के बलात्कार के आरोपी तथा पार्टी में अपने आंतरिक विरोधी अध्यक्ष को ख़त्म तो करना चाहता है किंतु अध्यक्ष के सजातीय वोटरों के नाराज हो जाने की संभावना के चलते आलाकमान का दबाव बढ़ते ही उसे कैसे बचाने में पूरी ताकत लगा देता है। अंत में सरोज पांडे का कोई पता ठिकाना नहीं मिलता और वह इन सब एक दूसरे के विरोधी किंतु आर्थिक रूप से एक ही दिशा में चलने वाले हमसफर स्वार्थी लोगों की भीड़ बन जाती है।

वास्तव में परमू तथा भोला सरोज का विवाह कराने के बहाने उनका अपहरण करते हैं। पार्टी अध्यक्ष दबंग भी है और औरत को भी व सरोज को खुद ही गाड़ी में बैठा कर उसके वयस्क होने की बात प्रमाणित करने के लिए उसकी आयु का फर्जी प्रमाण पत्र बनवाने के लिए ले जाता है। बाद में वह महंत के मंदिर में छिपाकर रखी जाती है। यहीं पर उसके साथ अध्यक्ष तथा उसके चमचा अपना मुंह काला करते हैं। महंत का अड्डा उन्हें अध्यक्ष के बंगले से भी ज्यादा सुरक्षित लगता है, जो वर्तमान राजनीति के कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों की ओर भी इशारा करता है– "अबे तुम रहोगे देहाती भुच्चड़।"(8)

भोला समझाने लगा "अध्यक्ष जी के यहां तो फिर भी एक बार पुलिस आ सकती है पर महंत जी के यहां किसकी हिम्मत है अध्यक्ष जी जैसे बाइस उनकी जेब में है।"(9)

अब मुख्यमंत्री के लिए यह वरदान ही था कि उसके प्रतिद्वंदी गोरखनाथ का राजनीतिक भविष्य सरोज पांडे के साथ बलात्कार के आरोप में फंसकर बर्बाद हो रहा था।

अखिलेश ने मीरा यादव के दोहरे व्यक्तित्व को बड़ी खूबी से उभारा हैं। पहले तो वह उससे पीड़िता सरोज पांडे के प्रति सहानुभूति से भरी हुई एक महिला नेता के रूप में सामने लाते हैं, हालांकि इसमें आने के पीछे उसका मकसद अपनी राजनीतिक छवि को चमकाना तथा विपक्ष

को बदनाम करना है, सरोज को न्याय दिलाना नहीं। अतः इस प्रकार पीड़िता की संवेदना के साथ खेला जाता है, किस तरह उसकी संवेदना का राजनीतिकरण होता है अखिलेश ने उसे काफी सूक्ष्म रूप से प्रस्तुत किया है। नीरा यादव सरोज जैसी सोने की मुर्गी को खोना नहीं चाहती और सरोज से कहती है "मान लो, तुम घर जाओ और तुम्हें वहां घुसने ही न दिया जाए, घरवाले तुम्हें धक्के देकर खदेड़ दे, तब आखिर इज्जत लूटा चुकी लड़की का बोझ उठाना आसान है क्या! मैंने तुमको अपनी छोटी बहन बनाया है ऐसे कैसे नर्क भोगने के लिए वहां भेज दूं" (10) अतः मीरा यादव का सरोज के प्रति संवेदना झूठा है अपनी रोटी सेकने के लिए हैं।किस प्रकार व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए संवेदनाओं का क्रय- विक्रय होता है यह कहानी उस ओर भी इशारा करती हैं। जब मीरा यादव नेताजी से कहती है वह हमारे काम की है तो इस वाक्य से मीरा यादव के व्यक्तित्व के कई रूप हमारे सामने खुलकर आते हैं। यह समय का सत्य भी है और सत्ता का लोभ जहांहोता है वहां कुछ भी उचित अनुचित, सही गलत नहीं होता। अगर सही होता है तो केवल व्यक्तिगत स्वार्थ ।

इसी प्रकार नेपाली साहित्य में असीत राई की कहानियों में मध्यवर्गीय जिंदगी की विडंबना असहाय स्थितियों,असंतोष एवं भय के साथ ही असहय वातावरण में जी रहे आम आदमियों के मुश्किल भरे जीवन संघर्ष को उभारता है। 'घर-घर को कथा' उनके कहानी 'संत्रस्त जिजीविषा' संग्रह की कहानी है।

इस कहानी में अजीत जी ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि देश की अर्थनीति ने एक परिवार को किस प्रकार से प्रभावित किया है और कई संवेदनाओं का क्षरण हुआ है विभिन्न इच्छाओं के बीच अर्थ की महानता ने रिश्तो में पनप रहे संवेदनाओं को पतला और कमजोर कर दिया है 'छोरा हजार रुपियाको जूत्ता लगाउने रहर राक्छ तर बाबूलाई पांच रूपियाको सर्टको धारणाले छोड.न सकेको छैन।' (11)

उनकी दूसरी कहानी 'निर्जातन को दंश' में भी शहरी और ग्रामीण जीवन के बीच के द्वंद में संवेदना की तलाश है । कहानी में कल्पना और सुबोध पति पत्नी है । सुबोध शहर का सुविधा संपन्न अत्याधुनिक जीवनशैली जीने वाला जवान है एवं कल्पना गांव के परिवेश में जन्मी तरुणी है । शहर के बड़े परिवेश, बड़े बंगले में भी कल्पना अपने को नीरस प्राणहीन एवं अकेला पाती है। विवाह की पहली रात भी पति के साथ उसे भाव विहीन लगती है। कहानी में शहर -गांव, परंपरा- सभ्यता, के बीच दांपत्य संबंधों में क्या संवेदना बची रह सकती है, इस प्रश्न को उठाया गया है । वास्तव में यह दांपत्य जीवन के लिए ही नहीं सामाजिक व्यवस्था के लिए भी एक चुनौती है ।

अखिलेश की कहानियां जहां निर्ममता के साथ बदलते समय के घात- प्रतिघात युवाओं की हताशा एवं मनुष्यता की दुर्दशा के चित्र दर्शाते है तो वहीं दूसरी तरफ वे उम्मीद का दामन नहीं त्यागते। उम्मीद का एक सोता उसकी रचना प्रक्रिया में सदा के लिए प्रवहित होती रहती है।

संजीव एवं समीरण छेत्री 'किरात'

यथार्थवादी लेखन की परंपरा में पूरी तरह से फिट भारतीय आत्मा को अपनी रचनाओं में हूबहू उतार देना मानो उनके कथा साहित्य का मूल उत्स है। संजीव का पूरा कथा साहित्य भारतीय

यथार्थ के अनुभव की प्रमाणिक अनुभूति है जो विभिन्न संवेदना से संरक्षित है अनुभूति जगत की अभिव्यक्ति ही रचनाकार की सृष्टि होती है। तथा यही अनुभूतियां संजीव से कहानियों लिखवा लेती हैं। संजीव के साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है कि वह अपने लेखन के लिए विविध विषयों का चयन करते हैं। भ्रष्ट प्रशासन, पुलिस और मजदूर के कटु यथार्थ, भारतीय नारी के यथार्थ जीवन का चित्रण, गरीबी, बेरोजगारी, बाजारवाद, उपभोक्तावाद, नक्सलवादी आंदोलन, पूंजीवाद के दुष्परिणाम, जातिवाद आदि कई उनके कहानियों का विषय है। उनके साहित्य का मूल उद्देश्य मनुष्य में छिपे शौर्य और विवेक का सम्मान, हर तरह के शोषण के खिलाफ, हर तरह की लड़ी जा रही मुक्ति की लड़ाई के पक्ष में उठी चीख या प्रतिकार। इस संदर्भ में नरेंद्र जी लिखते हैं "संजीव आजीवन अपनी रचनाशीलता को आदमी और समाज को बेहतर बनाने के एक नफीस एक औजार के रूप में धारदार बनाते रहेंगे।"(12)

संजीव की कहानी संग्रह 'गली के मोड़ पर सूना सा कोई दरवाजा' में अनेक ऐसे कहानियां हैं जो मानवीय संवेदना को हमारे समक्ष प्रस्तुत करती हैं। बाल कहानी 'रोजी रोटी' के लिए जंगल जंगल शासकों के डर से भागते सर्वहारा पांच भाई और उसके परिवार का वर्णन करती हैं। अपना पैतृक गांव घोष बाबू की दीवार और उनके गुमास्ते के अन्याय अत्याचार से छोड़ना पड़ता है। गोपाल बूढ़े के चारों भाई प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष बाघ के ही शिकार हो गए हैं। उनके अजन्मे बेटे को बाघ की दहाड़ ने गर्भपात में मारा है और उनके पैर का घाव भी बाघ की ही देन है। सरकारी मुआवजा केवल परिवार के दो ही व्यक्तियों को मिलता है। सुंदरवन के गोसांबा द्वीप में चारों भाई मछली पकड़ते पकड़ते मारे गए थे। कहानी में बाघ व्यक्ति की शोषक प्रवृत्ति भी है और बिंब भी। हर जगह बाघों का डर बना हुआ है। व्यवस्था पर व्यंग करते हुए गोपाल बूढा कहता है–"साले हराम का खाना– खाकर बाघ बने हुए हैं। सरकार बाघ को संरक्षण देती है...बाघ और शोषक चाहे आदमी को खा जाए...।"(13) इस प्रकार शोषण में किस प्रकार से पारिवारिक संवेदना ,मनुष्य के विश्वास एवं मनुष्य के हनन को प्रभावित किया है।

इसी तरह दूसरी तरफ नेपाली कहानी में प्रसिद्ध कथाकार समीरण छेत्री 'प्रियदर्शी' का नाम उल्लेखनीय हैं। इनकी कहानियों में भी विविधता देखी जा सकती हैं परंतु मूल रूप से दांपत्य जीवन, सामाजिक संत्रास, संबंधों के विघटन ,वर्चस्व वादी राजनीति, बाजारवाद आदि का चित्रण देखा जा सकता हैउनकी कहानी संग्रह 'गैरी गांव की चमेली' इसी प्रकार की विषयों से संबंधित है। उनके कहानियों में दांपत्य जीवन में संवेदना का पतन सबसे ज्यादा दिखाई पड़ता है। इस संवेदना क्षरण के पीछे प्रियदर्शी ने जिन कारणों को दर्शाया है उनमें विश्वास, उत्तर आधुनिकता के नकारात्मक पहलू ,बाजारवाद ,अहम् आदि कारण हैं। 'गैरी गांव की चमेली' कहानी का प्रमुख पात्र रणे और चमेली हैं। दोनों ही गांव के निम्न मध्यवर्गीय परिवार से संबंधित है । गांव के मुखिया की काली नजर चमेली के ऊपर पड़ता है और उसके गृहस्ती को बर्बाद करने के लिए गाय देने के बहाने से ऋण के भार को थोप देता है। इस ऋण के उधार से अपनी एकमात्र झोपड़ी के खो जाने की चिंता दंपति को जला रही है। वे दोनों सामूहिक रूप से श्रम करते हैं। व्यर्थ में भी सुख और समृद्धि की आशा रखते हैं। परंतु ऋण की चिंता उनके संवेदनाओं को बार–बार पूरे जीती है वह खींजते हैं परंतु चुप रहते हैं। मानो चुप रहना उनकी विवशता है।

इसी तरह संजीव कि 'अज विलाप' कहानी मुंबई के सर्वहारा की दयनीय अवस्था को दर्शाती हैं। देश के अलग–अलग हिस्से और पड़ोसी देशों के गरीब येां रोजी–रोटी की तलाश में आते हैं। यहाँ

आकर कुछ दिन बूचड़खाने में रहते हैं, जहां बकरे काटे जाते हैं। उस जगह को धोकर वहीं रहते हैं। 'याकूब' आजमगढ़ यू.पी. का है, तो 'गुलनार' बांग्लादेश की है। गुलाब पुलिस, मवालियों और सेठों के आतंक से प्रताड़ित है। दोनों एक दूसरे का सहारा बनते हैं– "देखो ये रहा ताला–चाबी। बाहर लेट्रिन है, यह कारड है मेरा। दिखाने पर पैसा नहीं लगेगा। बाएं बाजू में पानी का नलका है, 6:00 बजे आएगा पानी। तुम काम पर आओगी तो चाबी मुझे थमा देगी।" (14) पुरुष के अहंकार शक के चलते दोनों में विवाद चलता है पर अंत में एक हो जाते हैं कहानी दरिद्रता, स्लम दुनिया और शोषण को अभिव्यक्त करती है। स्लम के इस कठिन जिंदगी में संवेदना मानवीय संवेदना एवं मूल्य को बचाना एक चुनौती भरा कार्य हैं। दूसरी और संवेदना के क्षरण में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले कारक दरिद्रता भी है,जो व्यक्ति को असहाय और नपुंसक बना देती है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ एवं हायमन दास राई

उदारीकरण और अब संस्कृति ने भारतीय सामाजिक संरचना को बाहर से भीतर तक प्रभावित किया है। जीवन और समाज आधुनिकता के रंग में पूरी तरह सराबोर हैं जिसमें पाश्चात्य जीवन शैली आडंबर और विलासिता पूर्ण सामग्रियों से सुसज्जित बाजार व घर में मनुष्य अपना जीवन ही नहीं बल्कि अपना हर एक दिन किसी तरह से काट रहा है भागदौड़ औपचारिकता ही शेष रह गई है ठीक इसी तरह की औपचारिकता हम मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी संग्रह 'अनामा' में देखते हैं। विकास की तेज रफ्तार में मनुष्य का मानवीय संवेदनाओं से निरंतर वंचित होते चले जाना आधुनिकता का ऐसा भीषण संकट है जिससे आज सभी प्रभावित हैं और केंद्र में है आज का युवा वर्ग जिस पर आधुनिकता का सबसे गहरा और गंभीर प्रभाव पड़ा है। औपचारिक मित्रता, औपचारिक प्रेम, औपचारिक मुस्कुराहट, औपचारिक संवेदना मूल है, जहां दृश्य तत्व सर्वदा नदारद है और बौद्धिकता व विवेकशीलता पर भी प्रश्न चिन्ह लगा हुआ है। ऐसे बदलते समय के साथ संवेदना में आ रही गिरावट 'अनामा' कहानी संग्रह में देखी जा सकती है।

वर्तमान समय में बेरोजगारी हमारे समाज के लिए एक बहुत बड़ी समस्या बन चुकी है । इससे कई ऐसे अपसंस्कृति का निर्माण हो रहा है ,जो समाज के लिए अभिशाप है। युवा वर्ग निरंतर संघर्ष से जूझ रहा है जहां एक तरफ औद्योगिकरण, यातायात के विकसित साधनों, मशीनीकरण, बैंक व्यवस्था, प्रौद्योगिकीकरण आदि ने मानव को सुविधाएं एवं आराम प्रदान किए हैं वहीं दूसरी तरफ आर्थिक मंदी बेरोजगारी की समस्या आदि का आविर्भाव हुआ है आज या बेरोजगारी परिवार में कई संवेदनाओं और मूल्यों के लिए काफी घातक हो गई है। गांव और शहर दोनों ही इस पीड़ा से जूझ रहे हैं। नौकरी पाना आज काफी कठिन हो गया है।

वर्तमान में खड़ी इस समस्या को लेकर लेखिका ने 'अनामा' कहानी में चिंता व्यक्त की है इस कहानी में अनामा जब विदेश से भारत लौटती है तो यहीं रहकर नौकरी करने का निर्णय लेती है। उस समय उसकी सहेली उससे कहती है कि "आज के दिनों में नौकरी खोजना! एक चैलेंज है।" (15)

इस बेरोजगारी के कारण मनुष्य को निर्धनता में जीवन काटना पड़ता है । ऐसी स्थिति में एक युवा की मनः स्थिति मानो संवेदना विहीन होती चली जाती है।

जब मानवीय मूल्य और संवेदना समाप्त हो जाती है तो कई विकृतियां जन्म लेती है। उसी में एक है आतंकवाद। आतंकवाद के कारण ऐसी दुर्दशा हो गई है कि वे अपनी मौत का इंतजार कर रहे हैं। जब तक सांसे हैं जो भी रुखा सुखा जला हुआ मिलता है उसे निगल रहे हैं और गुजर-बसर कर रहे हैं। खाना खरीदने के लिए अर्थ की आवश्यकता होती है जो कि बिना किसी रोजगार के संभव नहीं। 'रक्स की घाटी और 'शब-ए-फितना' में एक स्त्री पात्र अपने पति को घर में जो भी रुखा-सुखा खाना उपलब्ध है उसे देती है। लेखिका ने इस स्थिति का बड़ा ही मार्मिक चित्र इस कहानी में व्यक्त किया है ,"एक लकड़ी का टुकड़ा चूल्हे में सरका दिया और उसे कुछ खाने को दिया, मुरब्बे में फफूंद लगी थी और रोटी जली हुई थी। डर, गरीबी और भूख ने बाहर भीतर सब ध्वस्त कर दिया, उसने पहला गुस्सा तोड़ा और निकल लिया"। (16) अतः भारत में गरीबों की जनसंख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। अमीर अधिक अमीर और गरीब और गरीब होता जा रहा है। पढ़ लिख कर भी व्यक्ति रोजगार से वंचित है। वर्तमान समय में बेरोजगारी की समस्या इतनी जटिल व प्रबल हो चुकी है कि लोग कुंठित को आत्महत्या तक कर बैठते हैं। 'मौसमों के मकान सुने हैं' कहानी में बेरोजगारी के कारण आत्महत्या करते लोगों का विवरण दिया है। कहानी में एक व्यक्ति अपनी निराशाजनक परिस्थिति तथा आत्महत्या के कारण बताते हुए लिखता है कि "मैं 40 साल का अकेला कुंवारा हूं मुझे माइग्रेन के दौरों और टॉपर होते हुए बेरोजगारी ने बर्बाद कर रखा है।" (17) आत्महत्या आज एक विकट समस्या है, जब व्यक्ति संवेदना शून्य हो जाता है तभी वह ऐसे कुकृत्य के लिए अग्रसर होता है। इस प्रकार कई कहानियों में मनीषा कुलश्रेष्ठ ने मानवीय संवेदना और उनके बदलते मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया है।

नेपाली में हायमन दास राई 'किरात'कि कहानी संग्रह हो 'केही नमिलेका रेखाहरु', 'हाईकिंग', 'मिल्कीएका कथा' आदि कहानी स्संग्रहो मे जीवन की कई समस्याओं और उन समस्याओं के बीच मुरझाते मानवीय संवेदनाओं का सूक्ष्म चित्रण किया है।'केही नमिलेका रेखाहरू'कहानी संग्रह के दूसरे भाग में 'रतिया' कहानी है। कहानी में मूल नारी चरित्र रतिया है जिसके पति का नाम जोसेफ है। जोसेफ और रतिया के उम्र के बीच 18 वर्ष का अंतर है, यह अंतर उनके मानसिक स्थिति मे भी देखा जा सकता है। जोसेफ इसके पहले मेरी नाम के लड़की से प्रेम और एक दूसरी लड़की से विवाह कर चुका है और अंत में जोसेफ ने रतिया नाम की लड़की से विवाह किया। यहां भी संबंधों में एक तो समय और दूसरा अर्थ हावी है। किसी तरह चपरासी की नौकरी से गुजारा तो चल रहा है परंतु अपना एक घर नहीं है रतिया को फटी हुई साड़ी पहनकर अपने जीवन का गुजारा करना पड़ता है। इसी प्रकार 'मलाई चिन्यौ'कहानी मैं मूल समस्या अर्थ का है शंभु रूप गुण से संपन्न होने के बाद भी गरीबी के कारण वह अयोग्य हैं। तंबू का विचार ऐसा हो गया है कि वह समझता है कि सामाजिक मान प्रतिष्ठा सब पैसे द्वारा ही संभव है- "धन आफ्नो पौरखले कामउन सकिन्न? जैरूपा किन गांउमा राई पगरी भाएर आफ्नो अदब चलाऊंछ सबै उसलाई मान्छन, त्योंधन होईन?....मलाई किन हेला गर्छ, ममा संपत्ति छैन।" (18)

इस वाक्य से पात्र की व्यथा एवं मनः स्थितियों को साफ-साफ दिखा जा सकता है जहां वह पल-पल टूट एवं विघटित हो रहा है। इसके पीछे का मूल कारण अर्थव्यवस्था का बढ़ता वर्चस्व जिसमें सामान्य लोग मानवीय संवेदना से वंचित होते हुए जड़ बनते जा रहा है।

निष्कर्ष :

इस प्रकार बीसवीं सदी के उपरांत सामाजिक–आर्थिक, नैतिक, व्यक्तिक, शैक्षणिक एवं राजनीतिक दृष्टि से आदमी के जीवन में जो अराजकता एवं अशांति आई उनके कारण चारों ओर सताया हुआ आदमी ही दृष्टिगोचर होता है। निरंतर बढ़ते हुए भ्रष्टाचार एवं स्वार्थ में आदमी के अस्तित्व संबंधों एवं विश्वास पर जमकर प्रहार किए। स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में एक बड़ा परिवर्तन यथार्थ एवं संवेदना के रूप में कहानी में चित्रित हुआ सामाजिक एवं पारिवारिक संबंधों में आने वाले परिवर्तन को लेकर जो कहानियां लिखी गई उनमें पुरानी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करने वाले वे पात्र हैं जो अभी तक परंपरागत जीवन मूल्यों से चिपके हुए हैं। वर्तमान समय में विषमताओं के तमाम तत्वों को न निगल सकने के कारण जहां नई पीढ़ी आवाहन आशा निराशा एवं कुंठा के पौधों को सींचने के लिए विवश है वहां शिक्षा तंत्र की रोटी खाने वाले बुद्धिजीवी प्रजातंत्र का खुला तमाशा देख कर भी कुछ ना कर सकने की स्थिति में है। इस प्रकार इस असंतुष्ट आदमी की अनास्था उनका मित्रों एवं प्रतिकार की भावना ही उपर्युक्त कहानीकार के कहानियों में दिखाई देती है। वर्तमान कहानीकार के सामने समस्याओं, चिंताओं और समाधाननों का ढेर है। आज कहानी मनोरंजन के साथ किसी न किसी सत्य का उद्घाटन करती है। वैज्ञानिक युग का मानव पूर्णरूपेण स्वतंत्र है। आधुनिक कहानी साहित्य किसी व्यक्ति को महत्व नहीं देता है। आज का प्रत्येक कहानीकार अपने कहानियों में व्यक्तिगत मान्यत्ताओं धारणाओं और चिंताओं को मूर्त रूप देने की चेष्टा करता है। वह वर्तमान को भूलकर केवल भविष्य के काल्पनिक शांति में ही लीन नहीं रहता, वह अपने युग और उसमें निहित नई मान्यत्ताओं के प्रति सचेत है। कहानी व्यक्ति व समाज की होती हैं, उसके कार्य कारण और संबंध की होती है।

इस प्रकार तुलनात्मक विवेचन के उपरांत कह सकते हैं कि हिंदी और नेपाली कथाकार दोनों ने ही समय के सूत्र को पकड़ा है और उसकी पृष्ठभूमि में संवेदनाओं को एवं मनुष्य होने की इयत्ता को संभाला है। कहानीकारों ने मानवीय मूल्य और संवेदनाओं को बचाने के लिए आशावादी बनने की प्रेरणा दी है संजीव, अखिलेश, मनीषा कुलश्रेष्ठ, नेपाली के अतीत राई, समीरण क्षेत्री,हायमन दास राई का चिंतन एवं प्रयास सराहनीय है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय, हिंदी साहित्य एक आधुनिक परिदृश्य, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2018. पृष्ठ 18.

2. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018, पृष्ठ 111.

3. डॉ सुरेश सिन्हा, हिंदी उपन्यासों में नायिका की परिकल्पना, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999, पृष्ठ 107.

4. रामविलास शर्मा, स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य, काशी: हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, 1956, पृष्ठ 33.

5.प्रेमलता शर्मा, समाजवादी यथार्थवादी और नागार्जुन का काव्य, यात्री प्रकाशन, दिल्ली, 1977, पृष्ठ 33.

6.पूनम मदान, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, 2013, पृष्ठ 447.

7.अखिलेश, शापग्रस्त, राधाकृष्णन प्रकाशन, 2009 पृष्ठ 37.

8.अखिलेश, प्रतिनिधि कहानियां, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली,2017, पृष्ठ 87.

9.वही, पृष्ठ103.

10.वही, पृष्ठ123.ठ

11.असीत, राइ, सिक्किम प्रकाशन ,2006, पृष्ठ12.

12.संजीव, सामाजिक यथार्थ और कथाकार संजीव, श्रुति पब्लिकेशन, जयपुर, 2009, पृष्ठ18.

13. वही, पृष्ठ121.

14.संजीव. गली के मोड़ पर सूना सा कोई दरवाजा, ओरा पब्लिकेशन, 2008 पृष्ठ113.

15.कुलश्रेष् मनीषा कुलश्रेष्ठ, अनामा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, पृष्ठ145.

16.वही पृष्ठ168.

17.वही पृष्ठ195.

18.हायमनदास राई.केही नमिलेका रेखाहरू (खंड- 2).कयार्थ प्रकाशन,2009, पृष्ठ135.

मोहन महतो (शोधार्थी)

लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी (फगवाड़ा पंजाब)

डॉ विनोद कुमार (सुपरवाइजर, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी)

पता:

मोहन महतो

2/6 बाघाजतिन कॉलोनी, पोस्ट-प्रधान नगर

पिन -734003,जिला-दार्जीलिंग, (राज्य-पश्चिम बंगाल)